कृष्ण तत्व-१

आज... सर्वलोक महेश्वर, सर्वेश्वरेश्वर, सर्वातीत, सर्वमय, अचिंत्य, अनंत, विरुद्ध गुण धर्माश्रय, अखिलरसामृत-सिंधु, नन्दनन्दन, राधानाथ, श्रीकृष्ण भगवान् का प्राकट्य दिवस है।

इस भूतल को..., इस भूलोक को विशेष रुप से धन्य करने के लिए श्रीकृष्ण भगवान् का प्राकट्य हुआ। मूलतः किस प्रकार से धन्य करना चाहते हैं श्रीकृष्ण? अपनी निरुपम माधुरी व निरुपम लीलाओं के द्वारा वे समस्त जीवों को अपनी ओर आकर्षित करना चाहते हैं।

अब जो हम कहेंगे ध्यान से समझिएगा। **श्रीकृष्ण आनन्दमय हैं, प्रेममय हैं, सौन्दर्यमय हैं व माधुर्यमय हैं।** ठीक है? **इन आनन्दमय, सौन्दर्यमय, प्रेममय, माधुर्यमय भगवान् की जो उपासना है, इस उपासना का जो भाव है, यह भाव अगर हृदय में प्रतिष्ठित हो जाता है, तो जीव की जो आनन्द की धारा है वो अटूट हो जाती है और सदा-सदा के लिए जीव धन्य हो जाता है।** मुझे मालूम है अभी समझ नहीं आया जो हमने कहा है। अभी किसी को समझ नहीं आया।

क्या हैं श्रीकृष्ण?

आनन्दमय, प्रेममय, सौन्दर्यमय, माधुर्यमय...। इन, इन भगवान्..., सौन्दर्यमय भगवान्, आनन्दमय भगवान्, प्रेममय भगवान्, माधुर्यमय भगवान् की उपासना का भाव जब हृदय में प्रतिष्ठित हो जाता है, तो जीव की जो आनन्द की धारा है वो अटूट हो जाती है।

हम जीव हैं..., क्या चाहते हैं? क्या चाहते हैं? प्रति क्षण? सोते हुए..., जागते हुए..., बैठे हुए..., लेटे हुए..., खड़े हुए..., क्या चाहते हैं हम? भगवान् क्या हैं? सच्चिदानन्द। जब कोई बात सोचते हैं, तो उसको hold करिए। यह नहीं की एक कान से सुना और कितनी बारी सुना। आप आनन्द चाहते हैं..., "वो" आनन्द हैं। आप क्या चाहते हैं, कि कोई मुझे प्यार करे, प्रेम करे। हमने क्या बोला? आनन्दमय, प्रेममय। "वो" प्रेममय हैं, आनन्दमय हैं, जो आप चाहते हो "वो" वो ही हैं। यह बात समझ आ जाए then the living entity will stop running from pillar to post in search of Happiness. जीव भागना दौड़ना बन्द कर देगा आनन्द के लिए..., क्यों? जो मैं चाहता हूँ, वही तो ये हैं।

जब तक जीव यह नहीं जानता की भगवान् क्या हैं, आनन्द क्या है, उसका जीवन केवल एक गुंजल मात्र है। अपना बनाया स्वरचित गुंजल। आप क्या चाहते हो? क्या चाहते हो? "वो" वो हैं। आप क्या चाहते हो? प्रेम! वो भी "वो" हैं। सारी problem solve नहीं हो गई? हाँ।

अब इन आनन्दमय प्रेममय भगवान् की प्राप्ति कैसे होती है? इन माधुर्यमय भगवान्, आनन्दमय भगवान्, प्रेममय भगवान् की उपासना का जो भाव है, जब यह हृदय में प्रतिष्ठित हो जाता है,

"तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः
*वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य **प्रज्ञा प्रतिष्ठिता**"*

(गीता-२.६१)

प्रतिष्ठित..., प्रज्ञा..., प्रज्ञा क्या होती है? बुद्धि। बुद्धि में..., चित्त में यह प्रतिष्ठित हो जाता है की जो मुझे चाहिए वो तो ये ही हैं, तो जीव की अनंत..., जो अनंत आस्वादन की आकांक्षा है वो तत्क्षण पूरी हो जाती है और वो कभी टूटती नहीं है। आप कहते हैं न अभी मैं सुखी हूँ, अभी मैं दुःखी हूँ..., टूट जाता है आपका तथाकथित आनन्द। क्योंकि वो तथाकथित है। आनन्द एक ऐसी वस्तु है, एक बार मिल जाए तो कभी..., कभी छिन नहीं सकती, कभी टूट नहीं सकती। हमने अपने मन में आनन्द के जाल बुने हुए हैं। बद्ध जीव..., हमने क्या बोला प्रारम्भ में?

बद्ध जीव पर उपकार करने के लिए भगवान् श्रीकृष्ण का प्राकट्य है।

ये बद्ध जीव क्या होता है? बद्ध जीव वह होता है..., Conditioned living entity... अब यह Conditioned living entity क्या होती है? जिसने अपने happiness के लिए खुद ही conditions लगाई हुई हैं। ऐसे होगा तो मैं खुश होऊँगा..., ऐसे होगा तो मैं खुश होऊँगा और ऐसे नहीं होगा तो मैं खुश नहीं होऊँगा। इसे कहते हैं "Conditioned living entity" - बद्ध जीव।

और मुक्त जीव क्या है? उन सारी उटपटांग conceptions से मुक्त है। जो real conception है उसने उसे स्वीकार कर लिया है। क्या है real conception? भगवान् आनन्दमय हैं, प्रेममय हैं, सौंदर्यमय हैं। आपकी आँखें क्या देख रही हैं प्रति क्षण? TV on किया, सड़क पर देखा, Mall में देखा, क्या देख रही हैं आँखे? किसको देखना चाहती हैं? सुन्दरता को। वो ही 'सौन्दर्यमय' हैं। आप ऐसा कुछ चाहते हो मेरा मन हर जाए। वो सर्वमनोहर माधुर्यमय हैं, हमारे मन को पूरी तरह से..., जो आप चाहते हो, वो ही श्रीकृष्ण हैं। यह बात समझ में आ जाए।

अब कई भक्त लोग सोच रहे होंगे कि हमे थोड़ा-थोड़ा समझ आता है। आप में से कुछ भक्त कभी गए होंगे वृन्दावन। कितने भक्त गए हैं वृन्दावन? कभी मंगला आरती..., मंगला आरती में जाने का अवसर प्राप्त हुआ? किसको प्राप्त हुआ? सबको नहीं प्राप्त हुआ? अच्छा मंगला आरती किसने attend की थी? Tandon जी, मंगला

आरती आपने attend की थी? किसने attend की थी ? Mr. Tandon ने attend की थी? राधा-कृष्ण की मंगला आरती? असम्भव ! त्रिकाल मे नहीं हो सकता यह। बैठ जाइए।

राधा-कृष्ण की मंगला आरती तो नन्द-यशोदा भी नहीं attend कर सकते। Tandon साहब और दिल्ली-वासी और भारत-वासी और अमरीका-वासी, ये कहाँ से attend करेंगे? आपको पता है मंगला आरती कहाँ पर होती है राधा-कृष्ण की? हम जाते हैं साढ़े चार (४:३०) बजे होती है..., सुना है सबने मंगला आरती? चार (४) बजे, साढ़े चार (४:३०) पाँच (५) बजे वृन्दावन में किसी भी मंदिर मे जाऐं, होती है..., होती है...?

ये कहाँ पर होती है मंगला आरती? मालूम है? आप मंगला आरती में जाते हो, मालूम है कहाँ जा रहे हो आप उस समय? ये होती है, निकुंज के अंदर। और निकुंज में क्या नंद बाबा, यशोदा माता को अधिकार है क्या प्रवेश करने का? निकुंज में? सुबह ४:३० बजे? वो भी विलास के उपरांत। अधिकार है क्या? नहीं है ! तो आपने मंगला आरती कैसे attend की? वो भी Tandon साहब ने? Tandon साहब को छोड़िए, कोई सखा ही नहीं जा सकता मंगला आरती के अंदर। भगवान् कृष्ण के नित्य माता पिता नंद-यशोदा? नहीं जा सकते। भगवान् कृष्ण के नित्य सखा - मधुमंगल, सुबल, स्तोककृष्ण, उज्जवल, कोई भी नहीं जा सकता। तो आप या हम..., आप कैसे चले गए? राधाकृष्ण की मंगला आरती कौन करते हैं attend? केवल सखी व मंजरियाँ।

"सखी-विना एइ लीला पुष्टि नाहि हय
सखी लीला विस्तारिया, सखी आस्वादय"
(श्री श्री चैतन्य चरितामृत् मध्य लीला ८.२०३)

सखी-मंजरी ही केवल मंगला आरती में जा सकती हैं। जब तक हमारा संबंध नहीं होगा भगवान् से तो भगवान् के सबसे Private Place..., क्या है सबसे Private Place? निकुंज। बिना संबंध के भगवान् किसी को अपने निकुंज में प्रवेश देंगे?

"गुरु" जो होते हैं, जब वे मंत्र दान करते हैं, तो हमारे को संबंध देते हैं, संबंध ज्ञान देते हैं - कि तुम कौन? भगवान् कौन? भगवान् तो श्रीकृष्ण हैं, तुम कौन हो? तुम कौन हो? तुम क्या, तुम यहाँ क्या करने आए हो? यहाँ ब्रह्मा, शिव की गति नहीं है ऐसे, तुम यहाँ क्या करने आए हो? कोई बोले, "मैं मंगला आरती attend कर रहा हूँ।" मान लीजिए राधा-कृष्ण सामने हो गए..., खड़े हैं..., तो आप पूछेंगे..., पूछेंगे, "कौन हो तुम? ऐ सखी, कौन हैं तेरी यूथेश्वरी?" क्या जवाब देंगे?

पहला प्रश्न है - "कौन से यूथ की है तू?" हमारी यूथेश्वरी कौन हैं? अनंग मंजरी। फिर वो बोलेंगे - "तेरी गुरु मंजरी कौन हैं री सखी?" कोई जवाब नहीं है। तो बिना..., बिना संबंध के कोई भी व्यक्ति राधा-कृष्ण के निकुंज में या मंगला आरती में प्रवेश नहीं कर सकता। और आप प्रवेश कर रहे हैं। क्या देख रहे हैं आप? राधा-कृष्ण को..., आप क्या सोच रहे हैं, कौन देख रहे हैं? Mr. Verma, Mr. Sharma, Mrs. Tandon..., यही देख रहे हैं? Mr. Aggarwal? इनको नहीं देखनी। आपको क्या सोचना है, मैं कौन हूँ? मैं सखी हूँ, मैं मंजरी हूँ, तो मैं मंगला आरती देख रही हूँ। और यह मंगला आरती कहाँ हो रही है? यह यमुना के तट पर, निकुंज में मंगला आरती हो रही है। आपको अपने सखी स्वरुप में रहना है।

और आप देखेंगे कैसे? आप अपनी पत्नी को देखते हैं, तो कोई भावना के साथ देखते हैं? अपनी बेटी को देखते हैं, कोई भावना के साथ देखते हैं? अपनी माँ को देखते हैं, एक भावना के साथ देखते हैं, आदर की। तो जब तक आपकी कोई भावना..., रिश्ता नहीं जुड़ा, तो आप क्या देखेंगे और क्या सेवा करेंगे? और भक्ति का क्या मतलब है? प्रेममयी सेवा। प्रेम करने के लिए सबसे पहले तो संबंध होना चाहिए, तो ये आनंदमय प्रेममय भगवान् से संबंध स्थापित हमारा "गुरु" करते हैं। ये जो मंगला आरती है, ये छोटी बात नही है..., मंगला आरती राधा-कृष्ण की attend करना।

भगवान् श्रीकृष्ण के चार (४) प्रकार के सखा हैं, चार प्रकार के सखा।

- एक को कहा जाता है - सखा,
- एक को सुहृद सखा,
- एक को प्रिय सखा,
- एक को प्रिय नर्म सखा।

अब जो सुहृद सखा होते हैं, चार प्रकार के सखा..., एक सखा होते हैं जो भगवान् श्रीकृष्ण से अपने आप को बड़ा मानते हैं, थोड़ा भगवान् के प्रति वात्सल्यमय भाव होता है। Protector होता है न? बलराम दाऊ जी। "ए तू मेरा छोटा है।" वैसे कई सखाओं का भाव होता है- सुहृद सखा।

फिर एक होते हैं सखा, जैसे कि भगवान् श्रीकृष्ण से अपने आप को उम्र में थोड़ा कम महसूस करते हैं, तो एक प्रकार के दास्य की गन्ध होती है उसमें।

एक सखा होते हैं - प्रिय सखा। ये प्रिय सखा क्या होते हैं? ये बिल्कुल एक जैसे होते हैं। "ऐ बैठ, चल घोड़ा बन।" किसको बोल रहे हैं घोड़ा बनने के लिए? जिससे साक्षात् काल डरता है। जिसकी चरण नख की धूल का कण शिव, ब्रह्मा अनंत काल की तपस्या के बाद भी नहीं प्राप्त कर पाते। ऐसे भगवान को क्या बोलते हैं? "चल

घोड़ा बन।" और उनको घोड़ा बनना पड़ता है। क्यों? क्योंकि भगवान् श्रीकृष्ण के भक्त की भक्त-वश्यता सबसे ज़्यादा है। भगवान् भक्ति के वशीभूत होते हैं, ठीक है? कभी आप बोल सकते हैं नृसिंह भगवान् को - "चल घोड़ा बन?" आपके मुँह में घोड़े बन जाऐंगे। भगवान् राम को बोल सकते हैं- "घोड़ा बन?"

इसलिए हमने प्रारम्भ में बोला - श्रीकृष्ण अखिलरसामृत सिन्धु हैं। आप इनसे जैसा संबंध स्थापित करना चाहें, आप कर सकते हैं। पर संबंध होना चहिये अटूट। अटूट..., नकली नहीं। कहाँ से होना चाहिए? हृदय से होना चाहिए संबंध। वो आपसे हर प्रकार का संबंध स्थापित करना चाहते हैं, आप हाँ तो बोलिए, आप किस भाव में प्रतिष्ठित हैं? आपका कौन से भाव प्रतिष्ठित करके श्रीकृष्ण के दर्शन कर रहे हैं आप? अगर आप सखा भी बनना चाहते हैं तो exact जानिए की आप कौन से सखा बनना चाहते हैं।

चौथे होते हैं श्रीकृष्ण के - प्रिय नर्म सखा। ये क्या होते हैं? ये होते हैं भगवान् श्रीकृष्ण के बहुत ही रहस्यमय जो वार्तालाप हैं, सखियों के साथ, जैसे की arrange करना meeting और कुछ पत्र letter इत्यादि देना, ये होते हैं प्रिय नर्म सखा। जो प्रिय नर्म सखा के कार्य होते हैं, वो सखा को, सुहृद सखा को, प्रिय सखा को, किसी को मालूम नहीं होते, और अपने भाव के प्रतिष्ठित होते हैं।

भगवान् से एक ही प्रकार का संबंध स्थापित किया जा सकता है। निश्चय करिए। कई बारी लोग पूछते हैं, "आपका भजन कैसा चल रहा है?" आपको पता है भजन होता क्या है? आपको पता भी है? मंगला आरती अगर वह बीस (२०) साल से attend कर रहा है तो, इसका मतलब क्या वह भजन कर रहा है?

भजन मतलब मेरा भजनीय से, जिनके मैं भजन कर रहा हूँ, उनसे मेरा एक संबंध है, मैं निश्चित रूप से जानता हूँ। ये आपके ऊपर निर्भर है आप कौन सा संबंध चाहते हो, पर एक बार निश्चय करने के बाद जो क्रियाऐं हम करते हैं - माला, अध्ययन, साधुसंग, सेवा, उस भाव को प्राप्त करने के लिए, उसे भजन कहते हैं।

केवल मंगला आरती मे Tandon, Ravi, Sharma, Verma, Gupta, Aggarwal खड़े हो गए, यह भजन नहीं होता। समझें बात को? आपने नहीं खड़ा होना..., आप अपने भाव के साथ खड़े होइऐ। इसलिए क्या बोल रहे हैं महाप्रभु चैतन्य चरितामृत में, *"अतएव...*, इसलिए, *गोपीभाव कोरि अंगीकार"*, बिना भाव अंगीकार किए हमारा भगवान् से संबंध स्थापित नहीं हो सकता और अगर आप राधा-कृष्ण..., राधा-कृष्ण की निकुंज लीला में गुह्यतम, निभृत निकुंज में स्थान चाहते हैं, तो

"अतएव मंजरीभाव कोरि अंगीकार
रात्रिदिने चिंते राधाकृष्णेर विहार
सिद्ध देहे चिंति करि ताहाई सेवन
सखी भावे पाय राधा कृष्णेर चरण"

(श्री श्री चैतन्य चरितामृत मध्य लीला ८.२२८-२२९)

निकुंज मे स्थान चाहते हो? राधा-कृष्ण कि सबसे गुह्यतम से गुह्यतम, Private से Private लीला देखना चाहते हो? हाँ, तो फिर किसी वास्तविक महापुरुष से दीक्षा ग्रहण करके अपना संबंध स्थापित कीजिए। इस..., जब आप इस तरह संबंध स्थापित करके भक्ति करेंगे, तो जब दीक्षा प्राप्त होगी तो आपको साधना-अधिकार प्राप्त होगा। क्या? क्या साधना का अधिकार? कि अपने आपको मंजरी समझ के राधा-कृष्ण की सेवा करो।

तो जो सखा हैं चार प्रकार के..., अगर सखा भी बनना है, तो जानना होगा - "मुझे कौन सा सखा बनना है।" और सखी भी बनना है, कोई बोले मंजरियाँ। अब राधा-कृष्ण के दर्शन कर रहे हैं, तो क्या सारी सखियाँ एक जैसे भाव से दर्शन करती हैं? राधा-कृष्ण के मान लीजिए योगपीठ में दर्शन हो, या कहीं भी दर्शन हो, क्या एक ही प्रकार से दर्शन होते हैं, राधा-कृष्ण के सखियों को?

अब सखियाँ भी बहुत प्रकार की हैं, जिस प्रकार से सखा बहुत प्रकार के हैं।

- कई सखियाँ होती हैं - कृष्णस्नेहाधिका, जिनका राधा के मुकाबले कृष्ण के प्रति ज़्यादा स्नेह है।
- कई सखियाँ होती हैं - समस्नेहा, समस्नेहा क्या होता है? जिनका राधा-कृष्ण दोनों के प्रति समान स्नेह है।
- कई सखियाँ होती हैं- राधास्नेहाधिका। ये क्या होती हैं? ये मंजरियाँ होती हैं। जिनके सर्वस्व राधारानी हैं, जिनके प्राण राधारानी हैं। समझ रहे हैं बात को?

तो अगर हमने भगवान् से कोई भी संबंध स्थापित करना है, सखा भी, तो सखा कौन से भाव का आप संबंध स्थापित करना चाहते हैं, उस पर दिन-रात चिन्तन करना होगा, मैं भगवान् का इस रूप में सखा हूँ। या अगर मैं सखी हूँ तो राधास्नेहाधिका हूँ, कृष्णस्नेहाधिका हूँ, समस्नेहा हूँ, कौन से रूप में हूँ? उसी रूप में चिंतन करके, उसी रूप में मंगला attend करो, दर्शन करो।

जो समस्नेहा हैं, दोनों को प्रेममय रूप से देख रहे हैं मंगला में। और जो हम मंजरियाँ हैं, हमारा सारा ध्यान कहाँ है? किशोरीजी की तरफ।

और सखा, *दास्य सखा भाव न होए लीला, न होए गोचर।* उनको ये लीला के दर्शन नहीं होते। तो नन्द-यशोदा से ज़्यादा भाग्य इन बद्ध जीवों का है एक दृष्टिकोण से, कि ये निकुंज में प्रवेश कर सकते हैं। गटर (Gutter) में पड़े हुए कलियुग के जीव राधाकृष्ण की निकुंज लीला में प्रवेश कर सकते हैं। इसलिए इस युग को पतितपावन महाप्रभु का प्रेम..., प्रेमयुग, प्रेमदाता युग कहा जाता है। सबसे पतित को सबसे उच्चतम वस्तु बेझिझक होकर प्रदान कर रहे हैं।

हम थोड़े दिनों पहले ब्रज में थे, तो इनको एक संघ के एक सन्यासी इनको मिले, वो २०-३० साल से सन्यासी, ४० साल से सन्यासी हैं और वो इनको कह रहे थे कि, इन्होनें बाताया कि ये राधाकुण्ड में आश्रय ले चुके हैं। तो वो सन्यासी कहते हैं कि, "मुझे तो पता नहीं कि मैं क्या करूँ, मैं कभी अपने आप को सखा मान लेता हूँ, कभी अपने आप को मैं सखी मान लेता हूँ, कभी अपने आप को मंजरी भाव मान लेता हूँ। तो मुझे तो पता नहीं मैं क्या हूँ? मैं कौन हूँ? क्योंकि मेरे कोई गुरु नहीं हैं न", ऐसे बोल रहे थे..., सन्यासी, जबकि उनके गुरु जीवित हैं। तो मुझे इतना हृदय रो रहा था मेरा यह बात जान कर कि तुम्हारे को २०-३०-४० के बाद भी तुम्हें यह ही नहीं पता की शुरुआत कैसे करनी है..., कि तुम्हारा भगवान् से किस भाव में संबंध है, तुम भजन में अग्रसर कैसे होगे?

आदौ श्रद्धा, फिर साधुसंग, फिर भजन क्रिया, फिर अनर्थ निवृत्ति, फिर निष्ठा, यह निष्ठा क्या होती है? क्या होती है निष्ठा? क्या होती है निष्ठा? भजन में निष्ठा। पहले तो भजन पता हो क्या होता है, फिर उसमें निष्ठा प्राप्त होना, इसे कहते हैं भजन निष्ठा। आपको अभी तक यह नहीं पता की आप किस भाव में भक्ति करना चाहते हो, निष्ठा तो बहुत दूर की बात है, प्रेम तो कोसों दूर की बात है।

भगवान् से हम किसी भी प्रकार का संबंध स्थापित कर सकते हैं -

"ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।।"

(गीता-४.११)

"ये यथा मां प्रपद्यन्ते", जो मेरा जिस भावना में, मुझे शरणागत होता है, सखा भावना में, सखा में भी प्रिय सखा भावना में, सखा में। अब कई भक्त हैं वो भगवान् राम की अपने आप को बुआ मानते हैं और पूरा meditate करते हैं और सिद्धि भी मिलती है। तो एक भावना में सिद्ध होना है।

सिद्धि क्या है? सिद्धि 'भाव' में सिद्धि है। पहले आपको भाव को पकड़ना है कि मुझे यह भाव चाहिए। फिर ऐसे भाव के महापुरुष से दीक्षा ग्रहण करनी है और फिर भजन करना है।

अब राधाकृष्ण के पास सखियाँ खड़ी हैं सारी, तो क्या सब एक भाव से दर्शन कर रही हैं? हम तो बिलकुल अलग भाव से करती हैं। क्यों? क्योंकि हमारी प्राणेश्वरी कौन हैं? राधारानी। परन्तु सब सखियों की नहीं हैं। कई सखियाँ समस्नेहा हैं। तो अगर सखी भी बनना चाहते हैं, तो जानिए exactly कौन सी सखी बनना चाहते हैं आप।

और यह जो आपका अहंकार होगा, यह आपका नित्य अहंकार होगा, नित्य अहंकार। इसे कहते हैं 'real ego'..., क्या है आपका नित्य अहंकार? मैं राधारानी की किंकरी हूँ, राधारानी की सखी हूँ। इस भाव, इस अहंकार को पुष्ट करते रहना है। और यह जो अहंकार हैं, मैं Tandon हूँ, Ravi हूँ, Suman हूँ, Kavita हूँ, Sanjeev हूँ, ये सब को, ये false अहंकार को हटाइऐ और real अहंकार को प्रतिष्ठित कीजिए हृदय में। यही भक्ति है। कोई बोले की क्या है भक्ति? भगवान् से जो तुम्हारा संबंध हैं, उस भाव को हृदय में प्रतिष्ठित करो।

गौरांग महाप्रभु के समय पर मुरारीगुप्त भगवान् राम के परम भक्त हनुमान जी हैं। मुरारी गुप्त रुप में महाप्रभु की लीला में हैं। तो महाप्रभु ने बोला तुम राधाकृष्ण का भजन करो। उन्होंने क्या बोला? मैं राम को छोड़ कर किसी को नहीं जानता। मैं राम का दास्य में, *तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता...*, उनकी प्रज्ञा, उनकी बुद्धि जो है, अचल है, अटल है, कोई हिला नहीं सकता। तो हमारा एक भाव हमें निर्धारित करना है। आप भक्ति करने आए हो, इतनी जन्माष्टमियाँ मनाते हो, कभी सोचा क्यों मना रहे हो? आप भगवान् से संबंध स्थापित करो तो तो भगवान् के यहाँ आने का सार्थक होगा नहीं तो,

"बहु जन्मे यदि करे श्रवण कीर्तन।
तबु तो ना पाय कृष्णपदे प्रेमधन"
(श्री श्री चैतन्य चरितामृत आदि लीला ८.१६)

या बहु जन्मे करे मंगल आरती, या बहु जन्मे करे जन्माष्टमी, "तबु तो न पाय कृष्ण पदे प्रेम धन"। भाव ही प्रतिष्ठित नहीं है।

अब यह मंजरी भाव सबसे श्रेष्ठ है। इस भाव से निकुंज लीला में प्रवेश मिलता है। यह मंजरी भाव के आचार्य कौन हैं? रुप-रति आदि मंजरी वर्ग। इन मंजरी वर्ग से हमें सीखना है कि किस प्रकार से भगवान् की सेवा, राधाकृष्ण की सेवा की जाती है।

सेवा क्या होती है? 'सेवा' क्या होती है? सेवा वो चीज़ होती है जिसमें अपना सुख-दुःख से कोई मतलब नहीं है। केवल मेरे सेव्य का सुख हो, इसकी ओर ही शत-प्रतिशत ध्यान केन्द्रित होता है। उस बात को सेवा कहा जाता है। यदि आप सेवा कर रहे हो और आपके भीतर थोड़ी सी भी कामना है, मेरा परिवार अच्छा हो जाए या मेरी health अच्छी हो जाए, उसको छोड़ो मुझे सिद्धि ही मिल जाए, तो भी आपकी सेवा सकाम सेवा है। सेवा का मतलब ही है कि स्वामी की प्रसन्नता के लिए।

बताइऐ, मंगला आरती में किस लिए जाते हैं कई भक्त लोग? उन्होंने बोला किस लिए जाते हो? बोले, हमें अच्छा लागता है। तुमको इसलिए मंगला आरती में जाना चाहिए? शर्म नहीं आती यह बात बोलते हुए। सेवा होती है - स्वामी की प्रसन्नता के लिए। मैं तो निकुंज में युगल सरकार की सेवा के लिए गई हूँ। तुमने सोच लिया कि मेरा परिवार का कल्याण हो जाए तो..., तो..., सेवा तो होती है सफ़ेद चादर, निष्पाप, निष्कलंक, परम शुद्ध।

भक्ति में और भगवान् में भेद है? है भेद कि नहीं है? भक्ति में और भगवान् में? भेद नहीं है। क्यों नहीं है? क्योंकि भगवान् परम शुद्ध हैं और सेवा परम शुद्ध होती है। तो हम अगर सेवा कर रहे हैं, जानिए अपने आप को, देखिए क्या मैं सेवा कर रहा हूँ? क्या मैंने कभी मंगला आरती में सेवा की? या मैं जो सेवा जन्माष्टमी का सब कर रहा हूँ, क्या ये बिल्कुल कामनाओं से रहित थी? आपकी कामना की गंध भी आ गई आपकी सेवा में तो सेवा पर कलंक लग गया। सेवा ही नहीं है वो।

राधाकृष्ण की युगल सेवा तो अति गूढ़तर है, यह तो मैं आपको एक..., केवल निष्काम सेवा की बात बता रहा था। आप लोग मेरी भाषा समझ पा रहे हैं? ये समझ आ रही हैं चीज़ें? मैंने अभी आपको जो सेवा की बात बताई, वो निकुंज सेवा की नहीं बताई, बताई क्या? मैंने आपको बात केवल कोरी निष्काम सेवा की बताई है। यह बात समझिए। अगर आप सेवा कर रहे हैं और अपने सुख और दुःख में ही व्यस्त हैं, अब मैं हरिनाम करता हूँ, क्यों करता हूँ? मुझे अच्छा लगता है। यह हरिनाम करने कि विधि नहीं होती है। मैं हरिनाम इसलिए करता हूँ क्योंकि राधाकृष्ण को उनका नाम सुनकर अच्छा लगता है, इस ओर ध्यान केन्द्रित होना चाहिए..., दास गोस्वामी के टीका में गुरुदेव कह रहे हैं।

इस ओर ध्यान..., राधाकृष्ण का नाम ले रहा हूँ, क्योंकि उनको अच्छा लगता है। हम तो, मेरा उद्धार हो जाए, मेरा ये हो जाए, मैं, मैं, मैं, मैं, यह तो ego है। सेवा मतलब आप, आप, आप, आप..., आप, आप, आप, आप... मैं, "I" आ गया तो sin बन गया- sin, पाप, "I" आते ही और "U"..., कृष्ण, आप रहे तो- "SUN", *कृष्ण सूर्य सम।* आप "I" को एक सेकंड के लिए भी लेकर आ गए..., मैं, मेरा परिवार,

मेरा पति, मेरे बच्चे, बस ! वो सेवा ही नहीं है। वो तो deal हो गई भगवान् से- देखो भई ऐसा है, मैंने तुम्हारी एक साल से मंगला आरती attend की, तुम ये कर दो मेरा..., deal करते हैं। यह हो रहा है भगवान् के साथ।

आज जो आपने अभिषेक attend किया, किसने attend किया? फिर वही Verma-Sharma, वही होंगे Aggarwal, Gupta! वो उन्हीं लोगों ने attend किया होगा फिर से, जबकि यह अभिषेक किसका था? श्यामसुन्दर का। श्यामसुन्दर का अभिषेक केवल कौन देख सकते हैं? ब्रजवासी। तो क्या हमने ब्रजवासी, ब्रजभाव में रह कर अभिषेक देखा? ब्रजभाव में रह कर? जिसने नहीं देखा, उसने कुछ नहीं देखा। फिर वही Tandon-Mondon, वही सब करने लग गए। No !

जन्माष्टमी के दिन गोलोक में अभिषेक होता है, सुबह के समय ही अभिषेक होता है। तो जब अभिषेक होता है, तो हमारी स्वामिनीजी वहाँ पर होती हैं। ऐसे अभिषेक होता है..., क्या सोचना चाहिए? मैं कहाँ हूँ, मंगला-आरती में कहाँ हूँ मैं? यमुना के तट पर निकुंज में हूँ, ठीक है जी? और जब अभिषेक हो रहा है तब मैं कहाँ हूँ? अच्छा, अभिषेक है कहाँ पर? हम सोच रहे हैं - अग्रसेन भवन में अभिषेक हो रहा है। अरे, नहीं बाबा...! अग्रसेन भवन में कोई अभिषेक नहीं हो रहा। भगवान्, *"वृन्दावन परित्यजम पाद एकम ना गच्छति"*

"वृंदावन परित्यज्यम् पाद एकम् ना गच्छति।
पश्यामि यदा यदा यदा व्रजभावम् ना विस्मरामि।।"

(प्रभाते संगीत)

भगवान वृन्दावन छोड़कर एक कदम बाहर नहीं जाते, तो कहाँ हो रहा है अभिषेक? नंदभवन में। आप सब लोग नंदभवन में थे, आपको अच्छी तरह meditate करना है, imagine नहीं करना, meditate करना है। नंदभवन में आप थे, क्यो थे आप? आप थे ही क्यों नंदभवन में? मुझे अच्छा लग रहा था इसलिए नंदभवन पहुँच गया, यही मतलब हुआ न? मुझे अच्छा लगा, मैं पहुँच गया, ऐसे नहीं Sir. आप नंदभवन में इसलिए थे क्योंकि आपकी स्वामिनी जी वहाँ थीं, किशोरी जी वहाँ थीं, तो किशोरी की सेवा मेरा प्राण है। मैं राधारानी के साथ खड़े हो कर श्रीकृष्ण का अभिषेक देख रही हूँ, ये भावना से हमें अभिषेक देखना था, अभिषेक करना था।

आपने देखा होगा पहले पंच द्रव्य से अभिषेक होता है, मैंने सांकेतिक किया था पहले, वह क्या था? महाऔषधि से पहले अभिषेक होता है गोलोक में, तो इसलिए हमने महाऔषधि का सांकेतिक अभिषेक किया था। देखने में सब एक ही कार्य कर रहे हैं, वही शंख है, वही सब कुछ है, परंतु आप कहाँ हैं? You are where your...? You are

where your heart is..., आप वहाँ हो जहाँ आपका हृदय है। तो आप अग्रसेन भवन में हो ही नहीं। आप सीधा गोलोक में हो।

अच्छा ! अब राधाकृष्ण के दर्शन जो हैं सारी मंजरियाँ क्या एक जैसी होती हैं? हमने बताया सखाओं में भेद होते हैं, हमने क्या बताया आपको सखियों में भेद होते हैं। अब हम आपको बताएंगे मंजरियों मे भी भेद होते हैं। कई मंजरियाँ होती हैं- बहुत मृदु स्वभाव की - धीरा मृदु, बहुत soft होती हैं, बहुत soft होती हैं, डाँटती नहीं हैं किसी को कुछ, प्रेम से राधाकृष्ण से बात करती हैं। पर सारी मंजरियाँ ऐसी नहीं होती। कई होती हैं प्रगल्भा, कई होती हैं वामा, कई होती हैं धीरा, अधीरा..., कभी गरम, कभी नरम, कई होती है बिल्कुल वामा, बिलकुल प्रगल्भा, एकदम डाँट करने वाली।

तो "गुरुदेव" जब हमें सिद्ध प्रणाली देते हैं, दीक्षा के बाद, तो उसमें हमारा नित्य भाव भी बताते हैं कि आपका यह नित्य भाव है जिससे आपका राधाकृष्ण से संबंध है। तो जब आप दर्शन भी कर रहे हो राधाकृष्ण के मंगला आरती में तो आपको आपका भाव याद होना चाहिए, आपको अपनी गुरु-मंजरी का भाव याद होना चाहिए। किशोरीजी से आपका क्या संबंध है? श्यामा-श्याम के क्यों दर्शन कर रहे हो? उस समय आपकी क्या सेवा है? आप दर्शन करने से पहले क्या सेवा की है आपने, उसके बाद क्या करोगे?

जन्माष्टमी कोई मेला नहीं है, कोई दीवाली नहीं है, कि हाँ, शोर-वोर किया और हो गया..., न। जो ढंग से जन्माष्टमी कर रहा है, उसका भाव और बढ़ता रहेगा क्योंकि वह निकुंज में साक्षात् राधाकृष्ण के साथ में है। मंगला आरती सोचता है, यहाँ पर नंद भवन में रह रहा है, अभिषेक कर रहा है।

यह तो हमने आपको बताया की सेवा क्या होती है..., जिसमें कामना की गंध न हो। मैं सेवा इसलिए कर रहा हूँ, क्यों? मुझे अच्छा लगता है। क्यों कर रहे हो? मुझे बड़ा अच्छा लगा जी। मैं कई बारी भक्तों की बात सुनता हूँ, I felt very nice..., अगर मान लीजिए if it was very bad, तो आप सेवा ही नहीं करते इसका मतलब तो। आपकी तो बात ही क्या है? आपको तो Museum में बिठाना चाहिए।

निकुंज सेवा आप प्राप्त करना चाहते हो..., अपने सुख और दुःख में ही व्यस्त हो। हमें तो कृष्ण के केवल कोरे कृष्ण के सुख में भी मंजरियाँ व्यस्त नहीं होती हैं, अपना सुख-दुःख तो बहुत दूर की बात है। राधारानी सर्वस्व हैं मंजरियों का। सर्वस्व !! और कुछ नहीं चाहिए उन्हें। प्यासे को क्या चाहिए होता है? पानी। मंजरियों को क्या चाहिए होता है? मंजरियों को श्रीमती राधारानी और उनकी सेवा के बिना प्राण शीतल

करने का एक second भी कोई उपाय नहीं मिलता। वे तड़पती हैं राधारानी और राधारानी की सेवा के बिना हर समय, मंजरी। *"अतएव गोपीभाव"*, यह है गोपीभाव-मंजरीभाव..., कि राधारानी के बिना तड़प महसूस होना, यह नहीं कि हम घर में बैठ कर खुश हैं, या मैं भजन करके खुश हूँ। नहीं। भजन करने से अगर मैं खुश हूँ तो मेरी राधारानी के प्रति व्याकुलता बढ़ती रहेगी।

अब आपको बताएंगे कि निकुंज में जो सेवा भाव है, यह तो हमने आपको केवल सेवा भाव बताया था। कोई भी कामना भगवान् से माँगनी नहीं चाहिए, कभी कुछ भगवान् से..., कभी भी भगवान् से, ईश्वर से कोई कामना नहीं करनी चाहिए, यह बात ठीक है बोलना? यह बात भी under-statement है। **कभी भी ईश्वर से कामना करने का कुछ सोचना भी नहीं चाहिए, कामना करना तो दूर की बात है..., कि मेरे पिता ठीक कर दो, मेरा पुत्र ठीक कर दो, यह सब नहीं। कामना सोचनी ही नहीं चाहिए कभी ईश्वर से कि मेरा ये कर दो। Deal कर रहे हो? धंधा करने आए हो फिर से? ईश्वर से..., रसिकेन्द्रमौली से धन्धा कर रहे हैं? 'आपके' सुख में मेरा सब कुछ है, मैं दुःखी हूँ परवाह नहीं, मैं सुखी हूँ परवाह नहीं। 'आपकी' सेवा प्राप्त हो, सेवा करुँ।** आप, आप, आप और आप..., यह मज़ाक का विषय नहीं है भक्ति को हम जो समझ लेते हैं।

जो भगवान् का नाम ले रहे हैं, क्यों ले रहे हैं नाम? नाम क्यों लेना चाहिए? क्योंकि नामी को अपना नाम सुनना आच्छा लगता है। दास गोस्वामी हरिनाम करते थे राधाकुण्ड पर, तो भगवान् प्रकट नहीं हुए, अचानक सहसा प्रकट हुए, श्यामाश्याम-महाप्रभु, उन्होंने बोला, "तुम्हें क्या लगता है, जो तुम नाम ले रहे थे, मैं सुन नहीं रहा था क्या? मैं तो सब सुन रहा था, पर तुम्हारी व्याकुलता बढ़ाने के लिए, तुम्हें तत्काल दर्शन नहीं दे रहा था, मैं तो सुन रहा था।" भगवान्... जो हम नाम लेते हैं, वो उनका नहीं सुनते हमारा भी सुनते हैं। इसलिए हमको नाम लेना है, क्योंकि उनको अच्छा लगता है। और अपने प्रियतम का नाम कौन नहीं लेना चाहेगा? यह नहीं कि मैं भजन करता हूँ, मुझे अच्छा लगता हैं, मैं कर रहा हूँ। ये फिर वो ही तुम आ गए picture के अन्दर, तुम अपने आप को हटा नहीं सकते क्या? Just get out..., बाहर चले जाओ तुम picture से। केवल "वो" रह जाए और सेवा रह जाए और सेवा का सुख रह जाए। यह सुख होता क्या है, भगवान् के भक्तों को सुख क्यों मिलता है? क्योंकि...

आपको मंजरी का सुख बताते हैं, धीरे-धीरे समझ आएँगी ये चीज़े। राधाकृष्ण निकुंज में हैं। केलि-शय्या, पुष्प-शय्या पर हैं और आज की क्या रसिक..., आज की क्या लीला है? रसमय रसमयी के केश श्रृंगार कर रहे हैं। श्याम स्वामिनी के केश श्रृंगार कर

रहे हैं। तो उन्होंने केश संस्कार किए पहले और धीरे-धीरे करके सखियाँ जो हैं, अर्ध-विकसित-पुष्प ले कर आ गई, भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुएँ ले कर आ गई, राधारानी के श्रृंगार के लिए। तो श्रीकृष्ण श्रृंगार कर रहे हैं तो कौन, कौन कर रहे हैं श्रृंगार? साक्षात् श्रृंगार रस, महाभाव का श्रृंगार कर रहे हैं..., अपने हस्त कमल से। रसमय हस्त कमल से साक्षात् श्रृंगार रस, महाभाव स्वरुपिणी श्रीमती राधारानी का श्रृंगार कर रहे हैं। यह देख कर राधारानी परम प्रसन्न हैं..., परम प्रसन्न हैं, क्योंकि अद्भुत कला है। जैसे हम केश संस्कार करेंगे, उससे बिल्कुल भिन्न है जब श्रीकृष्ण..., केश संस्कार मतलब कंघी, कंघी करना, तो निकुंज में राधाकृष्ण यह कर रहे हैं।

और कृष्ण के केश संस्कार से राधारानी खुश हैं और मैं मंजरी वहाँ पर खड़े हो कर यह दर्शन देख कर खुश हो रही हूँ। सेवा की सामग्री मैं लेकर आई - मंजरी। रसमय ने श्रृंगार किया, रसमयी का श्रृंगार किया। वो दोनों तृप्त हुए, परितृप्त हुए और यह दर्शन मैंने किए और इससे मैं पूर्ण तरह से तृप्त हो गई। यह होती है सेवा। निष्कलंक, निष्पाप, सफ़ेद चादर, कामना रहित।

अब केश संस्कार कर रहे हैं तो राधारानी बहुत प्रसन्न हैं कि कितना सुन्दर केश संस्कार किया है। यह सब निकुंज की बातें बता रहे हैं। उन्होंने सोचा कि इतना सुन्दर केश किया है, क्यों न इनको मैं कुछ ईनाम दे दूँ। तो उन्होंने प्रेम से आलिंगन किया, चुम्बन इत्यादि किया, इनाम दिया, तो फिर श्रीकृष्ण क्या हो गए? अप्राकृत, अप्राकृत से हो गए। मतलब कि उनमें अष्टसात्विक विकार आ गए। तो जैसे ही विकार आऐ हाथ-पाँव काँपना शुरु हो गए तो, सारा श्रृंगार जो किया था वो खराब हो गया।

मैं आपको सारी लीलाएँ क्यों सुना रहा हूँ? क्योंकि इसमें आपका role बहुत important है, आपको सेवा कैसे करनी है, यह सीखना है।

"अतएव गोपी भाव करी अंगीकार,
रात्रि-दिने करे राधाकृष्ण सेवन।
सिद्ध देहे चिंति करि ताहाई सेवन
सखी भावे पाय राधा कृष्णेर चरण।।"

(श्री श्री चैतन्य चरितामृत मध्य लीला ८.२२८-२२९)

जब समझोगे नहीं तो सेवा कैसे करोगे? अब श्रृंगार हुआ और ईनाम मिला और सब गड़बड़ हो गई फिर से जैसे पहले थी। तो अब राधारानी क्या कर रही हैं? लीला पुष्प लेकर कृष्ण का ताड़न भर्त्सन कर रहीं हैं, उनका मज़ाक उड़ा रहीं हैं, उनको डाँट रहीं हैं, प्रेममयी डाँट कर रही हैं। तो आप सोचोगे, भगवान् को कोई डाँट रहा है। जब

राधारानी डाँटती हैं, तो भगवान् श्रीकृष्ण को जो डाँट होती है वो डाँट नहीं लगती। क्या श्लोक बताया जाता है शास्त्रों में?

"प्रिया यदि मान करि करये भर्त्सन,
वेदस्तुति हैते हरे सेइ मोर मन"
(श्री श्री चैतन्य चरितामृत आदि लीला ४.२६)

जब *"प्रिया यदि मान करि करये भर्त्सन"*, जब मेरी प्रिया जी, मेरी स्वामिनीजी, जो हमारी राधारानी हैं, जब वो कृष्ण का ताड़न-भर्त्सन करती हैं, डाँटती हैं, तो यह भगवान् को पता है कैसा लगता है? *"वेद स्तुति हैते हरे सेइ मोर मन"*, वेद स्तुति से भी जो भगवान् को आनन्द प्राप्त होता है, उससे भी कई गुणा आनन्द किससे प्राप्त होता है? राधारानी से डाँट खाकर।

अब राधारानी भी क्यों डाँट रही हैं? अपनी प्रसन्नता के लिए? नहीं। कि, "देखो मैं, तुमने गलती की देखो अब मैं तुम्हारे को डाँट रही हूँ", नहीं। वो इसलिए डाँट रही हैं क्योंकि यह कर के श्रीकृष्ण को अच्छा लगता है। देखिए, विशुद्ध सेवा भाव। कोई अपना मतलब ही नहीं है। जिनकी धूली..., चरण, चरणधूली पाने के लिए बह्मा, शिव तपस्या करते हैं, वो राधारानी का श्रृंगार क्यों कर रहे हैं? क्योंकि राधारानी को अच्छा लगेगा। अच्छा, राधारानी क्यों डाँट रही हैं? क्योंकि इससे कृष्ण को अच्छा लगेगा। अब देखिए मंजरियों की गूढ़ सेवा क्या है इसमें? मंजरियाँ खड़ी हैं और मंजरियाँ क्या कर रही हैं? मुँह पर हाथ रख के हँस रही हैं- गूढ़ हँसी। जैसे चलाकी..., थोड़ा तात्पर्यमयी हँसी। जैसे कुछ..., हँस के कुछ बताना चाह रही हों। वो हँस के यह बताना चाह रही हैं, तुमने क्या खराब कर दिया इशारों-इशारों से, गूढ़ हँसी के रुप मे बाताना चाह रही हैं। तो वो हँस भी नहीं रही अपनी प्रसन्नता के लिए।

अब देखिए क्या विशुद्ध जगत है, प्रेम जगत। कृष्ण कर रहे हैं राधारानी की प्रसन्नता के लिए कार्य, राधारानी कर रही हैं कृष्ण की प्रसन्नता के लिए कार्य। मंजरी कर रही हैं युगल की प्रसन्नता के लिए कार्य। यह सीखना है हमें आचार्यों से। यह ग्रंथों में है। जो Live आचार्य हैं, या ग्रंथों के माध्यम से हमें सीखना है। इस प्रकार से सेवा करनी है, तो उस भाव में भगवान् की उपासना के भाव में हम प्रतिष्ठित होंगे। और वो जो आनन्द की धारा है, प्रेम की धारा है, जो सम्बन्ध से प्राप्त होती है। आनन्द बिना प्रेम के प्राप्त नहीं होता। तो जब तक आपकी भगवान् से प्रेम की धारा ही नहीं होगी, तो आनन्द कभी प्राप्त नहीं होगा। हमेशा दुःखी के दुःखी रहेंगे, चाहे हम कितने भी यज्ञ कर लें, कितनी भी पूजा पाठ कर लें।

स्वयं को picture से, पूर्ण रुप से निकलना होगा। यह है मंजरीभाव।

अब..., अब जैसे राधारानी भगवान् श्रीकृष्ण के लिए माल्य गुम्फन करती हैं, माला बनाती हैं..., माला बनाती हैं..., अब ये जो माला बनाती हैं, तो इसमें क्या-क्या चीजें हैं? आप बोलेंगे, मैंने श्रीकृष्ण को माला पहना दी। हो गया जी। किसने बनाई थी फिर से? वही Verma, Sharma ने? वही Verma, Sharma फिर आ गए, भगवान् क्या करेंगे, Verma के हाथ की सुगंध चाहिए भगवान् को? Aggarwal की सुगंध चाहिए भगवान् को? चाहिए? बोलिए।

देखिए जब सुबह में जब श्रीकृष्ण गोचारण को जाते हैं तो राधारानी अपने हाथों से माला बनाती हैं। तो जो उनके हाथ की सुगंध है, सारी की सारी, वो माला में आ जाती है। और तुलसी मंजरी क्या हमारे को..., हमको यह लीला में सोचना है वो हमारे को माला देती हैं, "जाओ श्रीकृष्ण को वन में जा के दे आओ।" जैसे ही श्रीकृष्ण को माला पहनाई जाती है तो क्या होता है? भगवान् श्रीकृष्ण पुलकित हो जाते हैं, उनके बाल खड़े हो जाते हैं, आनन्द मे विह्वल हो जाते हैं, आत्महारा हो जाते हैं, किस बात से? केवल राधारानी के हस्त कमल से निकली हुई गंध द्वारा। तो जब भी हम श्रीकृष्ण को माला पहनाऐं तो राधारानी के हाथ से touch करके पहनाऐं। अब देखो श्रीकृष्ण का क्या हाल होता है? यह है श्रीकृष्ण की वास्तविक सेवा। राधारानी के हाथ को छू कर श्रीकृष्ण को माला पहनाऐं।

राधारानी का एक नाम है गंधोन्मादितमाधिता। राधारानी के, गंधोन्मादितमाधिता। इसका मतलब है कि राधारानी की गंध से..., गंधोन्मादित, की राधारानी की गंध से श्रीकृष्ण पूरा अपने आप को भूल जाते हैं। Madness हो जाती है। क्योंकि, किस-किस भाव से सेवा हो रही है श्रीकृष्ण की? मादन भाव से। मादन का मतलब ही है which maddens Kṛṣṇa..., समझ रहे हैं बात को? क्या होता है मादनभाव? Which maddens Kṛṣṇa... जो श्रीकृष्ण को पूर्ण रूप से पागल बना देता है। यह होता है मादन भाव।

देखो, श्रीकृष्ण का दर्शन करना चाहते हैं कई भक्त, भगवान् का दर्शन करना चाहते हैं, वह होती है, हद से हद वह होती है प्रेम भक्ति, प्रेम भक्ति से ऊपर होती है स्नेह भक्ति, फिर मान भक्ति, फिर प्रणय भक्ति, फिर राग भक्ति, फिर अनुराग भक्ति, फिर भाव भक्ति, फिर महाभाव भक्ति, फिर महाभाव भक्ति से ऊपर होती है मादन भक्ति। जो दास होते हैं, भगवान् के दास, वो प्रेम भक्ति तक जा सकते हैं। और प्रेम भक्ति के बाद स्नेह भक्ति, मान भक्ति, प्रणय भक्ति, राग भक्ति, यहाँ तक जा सकते हैं भगवान् के सखा। फिर स्नेह भक्ति, मान भक्ति, प्रणय भक्ति, राग भक्ति, भाव भक्ति..., राग भक्ति, अनुराग भक्ति, अनुराग भक्ति तक जा सकते हैं-

वात्सल्य भाव के उपासक या हद से हद कुछ सखा, ये जा सकते हैं अनुराग भक्ति तक। इससे ऊपर होती है भाव भक्ति, महाभाव भक्ति।

यह जो महाभाव भक्ति होती है ये सामान्य जीव, हम जैसे लोग सही रूप से साधना करें, इस भाव में अपने आप को भावित कर लें तो हम महाभाव भक्ति तक जा सकते हैं, जो नंद-यशोदा भी नहीं जा सकते। और इससे ऊपर होती है मादन भक्ति, सबसे सर्वश्रेष्ठ। स्नेह भक्ति से ऊपर मान भक्ति, मान भक्ति से ऊपर प्रणय भक्ति, इस प्रकार से, उसी प्रकार से दास्य भाव से ऊपर साख्य भाव, सखा भक्त से ऊँचा भाव कौन सा है? वात्सल्य भाव और वात्सल्य भाव से उच्चतम भाव कौन सा है? मधुर भाव। मधुर भाव में भी अलग-अलग खण्ड हैं। सखी भाव और मंजरी भाव।

सबसे ऊँचा क्या है? मंजरी भाव, यही मंजरी भाव हमें भगवान् श्री गौरांग महाप्रभु देने आऐं हैं। मादन भक्ति रस आस्वादन करवाने आऐं हैं। मादन भक्ति। जो केवल राधारानी उस आनन्द का आस्वादन करती हैं, "वो आस्वादन", एक बद्ध जीव को श्रीगौरांग महाप्रभु की कृपा से प्राप्त हो सकता है। करना क्या होगा? पूर्ण निष्काम भाव से राधाकृष्ण की सेवा, दिन-रात स्वयं को भूलकर। सेवा का तो मतलब ही यही होता है, कि स्वंय की विस्मृति हो जाए। मैं रहूँ ही नहीं, ये 'मैं' ही तो problem है सारी। ये मैं ही तो है सारी problem। मैं..., मैं।

हम बद्ध जीवन में..., संसारी लोग किसलिए आऐं हैं? बद्ध जीव, किसके कारण से आऐं हैं? ईश्वर की वजह, ईश्वर की इच्छा से? तो मुक्त भी कैसे होंगे? ईश्वर की इच्छा से। कैसे होंगे? निष्काम भाव से...। राधारानी, राधाकृष्ण की सेवा तो जब प्राप्त होगी सो होगी, यहाँ गुरु-वैष्णवों की निन्दा रहित हो कर उनके ओर व्यवहार, उनकी प्रेम पूर्वक सेवा करने से धीरे-धीरे हमारे अंदर निष्कामता का कुछ संक्रमण होगा। अभी तो हम इतने सकाम हैं कि हर बात पर हम सुख सोचते ही कैसे हैं, कि कैसे हैं, कि मैं, मेरे बच्चे और पत्नी के साथ ही मैं सुख होने का सोचता हूँ। मुझे सुख का मतलब ही नहीं पता family के अलावा। मालूम है family के अलावा सुख का मतलब? मालूम है? सुख का मतलब है - जब मेरी family में सब कुछ सही हो, सबसे पहली बात यह आती है। यह सुख नहीं होता, यह आनन्द नही होता। "मैं" को पूर्ण रूप से विस्मरण, भूलना होगा। श्लोक सुना होगा-

"अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते,
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्"

(गीता ९.२२)

कितनी बारी सुना है यह श्लोक? अनन्त बार। *"अनन्याश्चिन्तयन्तो मां"*, जो मेरी अनन्य भाव से भक्ति करता है, अनन्य भाव से क्या करना है? पहली बात तो अनन्य का मतलब, और कोई अन्य नहीं, मेरे बच्चे नहीं कोई भी नहीं, सिर्फ आप, अनन्य भाव से आपकी प्रसन्नता के लिए कार्य करना है, इसे कहते है अनन्य भक्ति। केवल आपकी प्रसन्नता ही मेरा सर्वस्व है, केवल आपकी प्रसन्नता।

अब राधाकृष्ण को चामर किया जाता है, आप चामर करते हो कभी-कभी भगवान् को राधाकृष्ण को, राधा रासबिहारी को चामर करते हो? क्या नाम है आपकी माता का, नाम क्या है? सुशीला, सुशीला देवी जी चामर करते हो कभी? चामर पता है कैसे करते हैं? कृष्ण को कैसे, कैसे आनन्द मिलेगा? हम कैसे चामर करती हूँ? मैं कैसे करती हूँ बताऊँ? चामर जब हम करते हैं, तो राधाकृष्ण..., इस प्रकार से चामर करते हैं की राधारानी के अंग की गंध श्रीकृष्ण के नासिका में प्रवेश करती है, आह...। श्रीकृष्ण वो गंध को प्राप्त करके बिल्कुल उन्मादित हो जाते हैं। और जब मैं ऐसे अंग-गंध श्रीकृष्ण के नासिका में प्रवेश करवाती हूँ, ऐसे दर्शन करती हूँ, तो यह दर्शन करके परम सुख को प्राप्त होती हूँ। ऐसे चामर किया जाता है। ऐसे। ऐसे नहीं कि चामर कर दिया Tandon, Ravi, Grover..., आप कौन हो? Kapoor ने चामर कर दिया। बताओ! Kapoor का चामर नहीं चाहिए किसी को। ये Aggarwal को बाहर भेज दो। समझे।

सेव्य के सुख में, सेव्य की प्रसन्नता में अपनी प्रसन्नता, इसे भक्ति कहते हैं। आपका सेव्य गुरु हैं, आपका सेव्य गौरांग-राधाकृष्ण हैं। उनकी प्रसन्नता में शत-प्रतिशत मेरी प्रसन्नता है। यहाँ तो भक्त साधक अपने सुख-दुःख को लेकर ही मरे जाते हैं। हाय मेरा सुख..., हाय मैं दुःखी हूँ..., हाय मैं यह नहीं कर सकता, मैं वो नहीं। मैं, मैं और मैं! मैं ही मैं बस!

करनी है राधाकृष्ण की प्राप्ति? कसम खाई है की नहीं करनी? कसम खाई है कि कम से कम मेरा तो यह 2nd last birth होगा, कम से कम, कि यह last birth तो मैं नहीं होने दूँगा अपना। 'आपकी प्रसन्नता', यह एक भाव होना चाहिए केवल।

तो हम क्या श्लोक बोल रहे थे - *"अन्नयाश्चिन्तयन्तो मां"*, अनन्य भाव से जो भगवान् की सेवा करता है। अनन्य मतलब उनके अलावा और कोई नहीं, पहली बात तो यह अनन्यता होती है। दूसरी बात अनन्यता का मतलब यह नहीं है कि हम माला कर रहें हैं या मंगला-आरती। केवल आपकी प्रसन्नता के लिए दिन-रात कार्य करना, इसको अनन्यता कहा जाता है। किसमें-किसमें अनन्यता? निष्काम भाव से आपकी सेवा में अनन्यता।

"अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते,
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्"

यह इस प्रकार से नित्य अभियुक्त रहता है। इस श्लोक का वास्तविक मतलब पता है क्या है? यह भगवद् गीता के नवें अध्याय का बाईसवाँ श्लोक है, इसका मतलब है, असली में- नित्य अभियुक्तता, अभियुक्त, मानस। मानस सेवा से अभियुक्त हो, राधाकृष्ण की मानस सेवा में जो व्यक्ति अभियुक्त होता है, जुड़ा हुआ होता है, उसका योगक्षेम भगवान्, भगवान् वहन करते हैं। योगक्षेम क्या होता क्या है? जो आपके पास है, उसकी रक्षा करना और जो नहीं है वो देना। किसके साथ करते हैं भगवान्? जो नित्य राधाकृष्ण की सेवा में, राधाकृष्ण के सुख में अपना सुख मानता हैं, उसका योगक्षेम वहन करतें हैं भगवान्, कि जो तुम्हारे पास है उसकी रक्षा और जो नहीं है वो भी देना।

सेवा में अपना सुख न रहे। कोइ चीज़ करनी है, वह अपने सुख के लिए न हो और कोई चीज़ नहीं करनी वह भी अपने सुख के लिए न हो। अब आप अर्जुन को देखिए। अर्जुन को क्या बोला भगवान् ने? करोड़ो लोगों का murder कर दे..., यही बोला था? उसने कर दिया। पहले क्या बोलता था? "मैं नहीं लड़ूँगा, मैं नहीं लड़ूँगा, मुझे दुःख होगा, मेरा ये हो जाएगा, वो हो जाएगा", वही बच्चों वाली बातें। भगवान् ने बोला, "अपने सुख-दुःख को भूल जा, क्या याद रख?" तो करोड़ो लोगों को मार दिया, ठीक है। उसी प्रकार से..., लीला के अन्दर।

यह तो हुआ इस जगत में रह कर सेवा किस प्रकार की करनी है, किसी प्रकार का सोचना नहीं चाहिए साधक को। "आप सुखी हो न गुरु? हे गुरुदेव, आप सुख हो? हे भगवान् आप सुखी हो? तो बस मैं कोई भी हद पार करने को तैयार हूँ।" जब तक यह नहीं करेंगे तो भगवान् की या गरु की कृपा कभी प्राप्त ही नहीं होगी। तो सस्ते का सौदा नहीं है, *"गुरु कृपा एव केवलम्", एव केवलम्,* गरु कृपा ही एकमात्र उपाय है, जिससे हमें प्रेम-भक्ति प्रदान होगी, हाँ।

जब अभिषेक होता है तो सामान्यतः क्या सोचते हैं? हम लड्डु गोपाल का अभिषेक कर रहे हैं, यही सोचते हैं? जब हम अभिषेक कर रहे हैं, तो किसका अभिषेक कर रहे हैं? साक्षात् अप्राकृत कामदेव, प्रेममय, रसमय, आनन्दमय, अखिलरसामृत् सिंधु श्रीश्यामसुंदर का। ठीक है।

हरे कृष्ण!